टकराते हुये आपस में दैव योग से मिले और उनका परस्पर में विश्वास हुआ। अन्धे में चलने की शक्ति है, और पंगु में देखने की, इसीसे अब वे दोनों मिलकर गमन और दर्शन क्रियाओं को कर सकते हैं, अतः पंगु अन्धे के कन्धे पर चढ़ा, तो अन्धा चला और पंगुने उसे राह बताई, सुतराम् वे अपने घर पर पहुंचे और दोनों ने अपना सम्बन्ध छोड़ा अर्थात् संयोग का त्याग किया। ऐसे ही चेतन पुरुष प्रकृति के साथ मिलकर उसके संयोग से ज्ञान गुण को प्राप्त होकर उसे छोड़ देता है, और वह भी अपना कार्य पूरा करके उसे छोड़ देती है। यही मोक्ष का स्थान है, तथा संयोग और उस से सृष्टि क्रम है॥ २१ ॥

सृष्टि का क्रम।

प्रकृतेर्महांस्ततोऽहंकारस्तस्माद्गणश्च षोडशकः।
तस्मादपि षोडशकात् पञ्चभ्यः पञ्चभूतानि॥२२॥

प्रकृति से महत् तत्व, उससे अहंकार, उस से १६ तत्व (५ ज्ञानेन्द्रियें ५ कर्मेन्द्रियें १ मन ५ तन्मात्र) और उनमें से भी ५ तन्मात्रों से ५ महाभूत (पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और आकाश) उत्पन्न होते हैं॥ अर्थात् शब्द तन्मात्रसे शब्द गुण वाला आकाश, (१) शब्द तन्मात्र से सहित स्पर्श तन्मात्र से शब्द और स्पर्शगुणवाला वायु, (२) शब्द और स्पर्श तन्मात्र से सहित रूप तन्मात्र से शब्द स्पर्श और रूप गुण वाला अग्नि (३) शब्द, स्पर्श, रूप तन्मात्र से संयुक्त रस तन्मात्र से शब्द, स्पर्श, रूप, और रस गुण वाला जल (४) और शब्द, स्पर्श, रूप, तथा रस तन्मात्र से युक्त गन्ध तन्मात्र से शब्द, स्पर्श, रूप, गन्धगुण वाली पृथिवी (५) उत्पन्न होती है॥

प्रकृति, प्रधान, ब्रह्म, अव्यक्त, बहुधानक, और माया, ये शब्द पर्य्याय (समान अर्थ के वाचक) हैं। महान्, बुद्धि, आसुरी, मति, ख्याति और ज्ञान ये सब पर्याय हैं। ऐसे ही अहंकार, भूतादि, वैकृत, तैजस और अभिमान, ये पर्याय हैं ॥ २२ ॥

बुद्धि का लक्षण और उस का धर्म।

अध्यवसायोबुद्धिर्धर्मोज्ञानं विरागऐश्वर्य्यम्।
सात्विकमेतद्रूपं तामसमस्माद्धिपर्यस्तम् ॥२३॥

बुद्धि का लक्षण अध्यवसाय है। अर्थात् पुरुष मात्र ही जब किसी कर्म में प्रवृत्त होता है, उस समय अन्तःकरण में तीन वृत्तियें या क्रियाएं होती हैं, जैसे पहिले आलोचन (वस्तु का ज्ञान) फिर 'मैं इस में अधिकारी हूं' ऐसा अभिमान, फिर 'मुझे यह करना चाहिये' ऐसा अध्यवसाय या निश्चय ज्ञान होता है। इन में यह तीसरी वृत्ति या ज्ञान जिस में होता है, वही बुद्धि है। बुद्धि में (१) धर्म, ज्ञान, वैराग्य और ऐश्वर्य्य ये चार सात्विक धर्म रहते हैं, और अधर्म, अज्ञान, अवैराग्य तथा अनैश्वर्य्य ये चार तामस धर्म रहते हैं।

वैराग्य की चार अवस्थाएं होती हैं, जिन के नाम— (१) यतमानसंज्ञा (२) व्यतिरेकसंज्ञा (३) एकेन्द्रियसंज्ञा और (४) वशीकारसंज्ञा हैं ॥ २३ ॥

अहंकार का लक्षण और उसका कार्य भेद।

अभिमानोऽहंकारः तस्माद्द्विविधःप्रवर्त्ततेसर्गः।
एकादशकश्चगणस्तन्मात्रपञ्चकश्चैव ॥ २४ ॥

अभिमान (मैं हूं यह ज्ञान) अहंकार है। उस से दो प्रकार की सृष्टि होती है, (१) ग्यारह इन्द्रियें और (२)